आखर हिंदी पत्रिका; e-ISSN-2583-0597 खंड 3/अंक 2/मार्च 2023
Received:17/03/2023; Published:24/03/2023

कहानी

पहचान

- डॉ. अश्विनी सचिन सदावर्ते

बेंगलुरु

आज गुलाबी रंग की साड़ी में अनघा कुछ अधिक ही खिल रही थी। आज वह बहुत खुश नजर आ रही थी। आज उसकी नौकरी का पहला दिन जो था। कुछ दिन पहले वह किसी काम से एक कॉलेज में गई थी। अनघा बहुत मीठी बोली बोलती थी। उसके बोलने का ढंग,भाषा का गहरा ज्ञान और भाषा संस्कारों का उसपर प्रभाव देख उस महाविद्यालय के प्राचार्य ने उसे पढ़ाने की उसकी रुचि के संबंध में पूछा। अचानक पूछे गए सवाल पर अनघा हड़बड़ा गई। क्या जवाब दें? उसे कुछ सूझ नहीं रहा था। बस इतना ही " हां" कहते हुए वह अपने आप पर खूश होते हुए वहां से निकल गई। घर आते ही शाम को आकाश के ऑफिस से आने का इंतजार करने लगी। आकाश,अनघा का हमसफर। वह ,अनघा को हमेशा जीवन में कुछ करने के लिए, समाज में अपनी पहचान बनाने के लिए प्रेरित करता था। रात का भोजन करते समय,आज घटी घटना को अनघा ने बिना मिर्च मसाला डाले, लेकिन बड़े ही रोचक तरीके से बताया। उसकी ये बातें उसके सास - साथ - ससुर भी सुन रहे थे। आकाश के साथअनघा के सासससुर को भी कॉलेज की नोकरी का यह प्रस्ताव - पिता ने अनघा को दूसरे दिन वहां जाने के लिए प्रेरित किया। - बडा अच्छा लगा। आकाश और उसके माता

दूसरे दिन सुबह जल्दी उठकर उसने घर का सारा काम निपटा दिया और तैयार हो ईश्वर की आराधना,सासससुर का आशीर्वाद और आ-काश से शुभकामनाएं लेते हुए कुछ घबराहट में ही घर की दहलीज पार कर ली। अनघा को हर जगह समय से पहले ही पहुंचना पसंद था। वहां पहुंचने पर उसे पंद्रह दिन बाद आने के लिए बताया गया। वह मायूस होकर घर वापस आई। उसका उदासी भरा चेहरा देखकर सास ससूर समझ गए कि कुछ हुआ है।-उन्हें पता था कि रात के भोजन के समय वही उसकी उदासी का कारण सबको बताएगी। अनघा ने अपने परिवार में एक नियम बनाया था कि रात के भोजन के समय हर कोई दिन भर घटी घटनाएं एक दूसरे के साथ बांटेगा। शाम को आकाश के ऑफिस से वापस आने के बाद - खाना खाते समय अनघा ने सुबह घटीघटना सबको सुना दी। आकाश और अनघा के सासससुर ने उसे - उम्मीद न छोड़ने की सलाह दी।

इसी प्रकार लगभग पंद्रह दिन बीत गए। आकाश ने अनघा को उसी कॉलेज से फोन आने की बात बताई। दो दिन बाद उसे इंटरव्यू के लिए जाना है बताया। अब और एक बार अनघा उत्साहित हुई। आकाश ने भी उसे इंटरव्यू की तैयारी में मदद की।

दूसरे दिन इंटरव्यू की पूरी तैयारी कर आत्मविश्वासपूर्वक अनघा घर से निकली। अनघा को इच्छित गंतव्य पर समय से पहले ही पहुंचना अच्छा लगता था।

वहां पहुंचने पर वहां का नजारा देख उसके पैरों तले से जमीन खिसकने जैसा आभास उसे होने लगा। गला सूख गया, पसीना आने लगा क्योंकि वहां पर उसके अलावा लगभग २०उम्मीदवार इस २५-नौकरी के लिए पहले से ही आकर बैठे थे। उन सबको देख अनघा को लगा ये नौकरी उसके बस की बात नहीं है। जैसे तैसे उसने अपना साहस बटोरा और वहीं पर पडी एक खाली कुर्सी सरकाकर बैठ गई। वहा ं बैठे बैठे सबके चेहरे निहारती,उन चेहरों को पढने का असफल प्रयास करती। उसके साथ वहां पर उसकी उम्र की कईं लड़कियां भी मौजूद थी। उन लड़कियों की शिक्षा और उनका आत्मविश्वास देख अनघा बारबार निराश हो - जाती । लेकिन उसने अब निश्चय किया कि यह नौकरी उसे मिले या ना मिले पर वह यह इंटरव्यू अवश्य देगी। आखिरकार उसका नाम पुकारा गया। वह हड़बड़ा कर अपने विचारों से बाहर आई। इंटरव्यू देकर सीधे घर वापस आई। शाम को उसने आकाश को सबकुछ बताया और यह बताना नहीं भूली कि यह नौकरी उसे नहीं मिलेगी। आकाश ने उससे कुछ नहीं कहा।

दिन बीतते गए, लगभग दस दिनों के बाद अनघा के नाम से एक कुरियर आया। उसने उसे खोला और पढ़ने लगी। उसका उसकी आंखों पर विश्वास ही नहीं हो रहा था। उसने तुरंत घर के अंदर बसे अपने भगवान के छोटे से मंदिर में उस पत्र को रखा, भगवान का आभार व्यक्त करते हुए दिल से प्रणाम किया। खुशी से झूमते हुए साससूर को अपना ऑफ़र लेटर पढ़कर सुनाया। दोनों को बड़ी खुशी हुई। ये खुशखबरी - आकाश को सुनाने के लिए अनघा उतावली हो रही थी, और ऐसे में आकाश को भी आज ही ऑफिस से वापस आने में देर होनी थी? आकाश के घर में कदम रखते ही अनघा ने उसके हाथ से उसका बॅग लेकर अपना ऑफर लेटर उसके हाथ में थमा दिया, और उसके लिए खाना लगाने लगी। आकाश की खुशी का कोई ठिकाना नहीं रहा। अनघा कि नौकरी की खबर से घर का वातावरण बिल्कुल बदल गया था।

उसे एक तारीख से कॉलेज आने के लिए कहा गया था। अब बस कुछ आठदस दिन उसे घर की सारी - चीजें लाने केलिए मिले थे। रसोई की आवश्यक सामग्री, सब्जी,फल सब कुछ उसेही लाकर रखना था। बड़े ही उत्साह से उसने तैयारियां शुरू कर दी। लेकिन आज जब उसे कल से ही कॉलेज जाना था तो उसके मन में विचारों का बवंडर उठने लगा। वह सोचने लगी,अब हर रोज सुबह जल्दी उठना पड़ेगा,घर की सफाई, आंगन की सफाई, रंगोली, बच्चों का, आकाश का टिफिन,साससुर का नाष्टा-, दोपहर का भोजन, बच्चों की पढ़ाई,उसकी नौकरी करने के निर्णय से कहीं वो अपने बच्चों पर सही संस्कार करने में कहीं पीछे तो नहीं छूटेगी? एक नहीं ऐसे अनगिनत विचारों से उसका माथा ठनकने लगा। परंतु दूसरे ही क्षण उसके अंतर्मन से आवाज आई,कि वह परिवार की सारी जिम्मेदारी संभालते हुए अपनी पहचान बनाने में सक्षम हैं। यह विचार मन में आते ही वह शांति से सो गई।

आज वह सुबह पांच बजे ही उठी घर का सारा काम निपटा कर,सबके टिफिन पॅक कर बच्चों को उनके स्कूल छोड़ने गई। उसके कॉलेज का समय बच्चों के स्कूल जाने के बाद का था और वापस आने का समय बच्चों के स्कूल से आने के पहले का था। इसलिए वह निश्चिंत होकर कॉलेज जा सकती थी। उसने आज के लिए अपनी पसंदीदा गुलाबी रंग की साड़ी कल रात को ही प्रेस कर रखी थी। आज कॉलेज का पहला दिन होने के कारण वह जल्दी पहुंचना चाहती थी। वैसे आकाश भी आज सुबह जल्दी उठकर तैयार हो गया था। ऑफिस जाते हुए आकाश उसे कॉलेज छोड़ने वाला था।

अच्छी सी तैयार हो वह कॉलेज के लिए निकली। आकाश ने उसे उसका खुला आसमान दिया था। अपनी पहचान बनाने का हौसला दिया था और कभी भी कहीं भी आत्मविश्वास डगमगाने लगे तो अपने साथ होने का विश्वास दिलाया था।

अनघा और आकाश का विवाह हुए आठ वर्ष बीत गए थे ।इन आठ वर्षों में अनघा ने अपने परिवार, रिश्तेदार,सासससूर-, बच्चे इन सबका ध्यान रखने में कोई कसर नहीं छोड़ी थी। अनघा को एक सुंदर सा बेटा और चुलबुली बेटी थी। आकाश की पसंद नापसंद और उसके इर्द गिर्द ही उसकी पूरी दुनिया बसी थी। अनघा को कभी लगा ही नहीं था कि वह अपने जीवन में अपनी पहचान बना सकती हैं। जब उसका विवाह हुए था तब उसकी शिक्षा तक पूरी नहीं हुई थी। घर परिवार संभालते हुए उसने कभी अपने आपको महत् -व ही नहीं दिया था। आकाश के सहयोग से उसने अपनी पोस्ट ग्रेजुएशन तक की शिक्षा संपादित की थी और उसी वजह से आज वह अपना नया आसमान छूने निकली थी। उसे अपने परिवार के बारे में सोचते हुए मन ही मन लग रहा था कि अगर हम अपने परिवार को एक स्नेह के बंधन में बांध रखते हैं तो यही परिवार भविष्य में हमारे साथ मजबूती से खडा हो जाता है और हर कठिन समय में हमारा साथ देता है। बस एक समर्पण भाव होना चाहिए।

****